

शिक्षण शास्त्रीय मुद्दे

शिक्षक भर्ती विशेष

पर्यावरण का अर्थ एवं परिभाषा - [Meaning and definition of Environment]

DEV SINGH EDUCATIONAL BUB
An Online Institution...
Mob. - 9455918439

सामान्यतः विद्यार्थी पर्यावरण और वातावरण को भ्रान्तिवश
एक दूसरे का पर्यायवाची समझ लेते हैं।

जब कि दोनों का अर्थ एवं अभिप्राय पूर्णतः भिन्न है।

वातावरण मुख्यतः जलवायु संबंधित तथ्यों को इंगित
करता है, जब कि पर्यावरण समस्त भौगोलिक अवयवों
का योग होता है।

विस्तृत रूप में हम यह कह सकते हैं कि वातावरण
को समझने के लिए उसके शाब्दिक अर्थ का
विश्लेषण एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी
परिभाषाओं का अध्ययन करना समीचीन होगा।

पर्यावरण शब्द परि + आवरण दो शब्दों से मिलकर
बना है, जिसका अर्थ है परिवृत्ति [Surrounding]
अंग्रेजी भाषा में पर्यावरण के लिये Environment
शब्द का प्रयोग किया जाता है।

एनवायरन का अर्थ है घेरना तथा मेन्ट का अर्थ
है चारों ओर इस प्रकार एनवायरमेंट का शाब्दिक
अर्थ है 'चारों ओर से घेरना'।

मानव के चारों ओर का वह क्षेत्र जो उसे घेरे रहता है
उसके जीवन तथा क्रियाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष
रूप से प्रभावित करता है।

दूसरे शब्दों में हम पर्यावरण को आस पड़ोस जैसी शब्द से अभिव्यक्त कर सकते हैं।

निश्चित रूप से पर्यावरण एक विस्तृत शब्द है। इस परिभाषा में मनुष्य से सम्बंधित वे सभी तथ्य, वस्तुएँ स्थितियाँ और दशाएँ सम्मिलित हैं।
जो मानव के जीवन विकास को प्रभावित करती हैं।

इस प्रकार किसी स्थान विशेष में मनुष्य के आसपास भौतिक वस्तुओं [जल, भूमि, वायु] का आवरण, जिसके द्वारा मानव घिरा होता है। को पर्यावरण कहते हैं।

कुछ विद्वान पर्यावरण को परिवेश, परिस्थान एवं निवास आदि शब्दों से भी व्यक्त करते हैं।

DEV SINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

पर्यावरण की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं -

रच. फिटिंग के अनुसार - उन सभी प्रभावकारी दशाओं का कुल योग जिसमें जीव निवास करता है, वातावरण पर्यावरण कहलाता है।

सैरीकिन के अनुसार - भौगोलिक पर्यावरण उन समस्त दशाओं की इंगित करता है। जो मानव के क्रियाकलापों से स्वतंत्र हैं तथा जिनकी रचना मानव ने ही की है। और जो मानव एवं उसके कार्यों से प्रभावित हुए बिना स्वतः परिवर्तित होती है।”

के. आर. दीक्षित के अनुसार पर्यावरण की परिभाषा तथा विषय - क्षेत्र हमारे हित, ध्यान एवं प्राथमिकताओं द्वारा निश्चित होते हैं। हमारा तत्कालिक हित स्थान जिस पर हम रहते हैं। वायु जिसमें हम सांस लेते हैं। भोजन जिससे हम खाते हैं।

पर्यावरण की विशेषताएं-

[Features of Environment]

1. पर्यावरण भौतिक और जैविक तत्वों का योग है।
2. पर्यावरण के भौतिक तत्व अपार शक्ति के भंडार हैं जो जैविक तत्वों को सक्रियता प्रदान करते हैं।
3. पर्यावरण में विशिष्ट भौतिक प्रक्रिया क्रियाशील रहती है इसी कारण जैव जगत सक्रिय है।
4. पर्यावरण का प्रभाव सभी प्राणियों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से पड़ता है।
5. पर्यावरण गतिशील होता है।
6. पर्यावरण स्वयंपूर्ण [Self supporting] और स्वनिर्भर प्रणाली पर आधारित होता है।
7. पर्यावरण में स्थानीय विविधता मिलती है।
8. पर्यावरण में पार्थिव रुकता पाई जाती है।
9. पर्यावरण जीवधारियों का आवरण-क्षेत्र है।
10. पर्यावरण प्राकृतिक संसाधनों का भंडार है।

DEVSINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

पर्यावरण अध्ययन की सार्थकता

[Significance of Environmental studies]

जीवधारियों का अस्तित्व पर्यावरण के भौतिक तत्वों पर निर्भर करता है। भौतिक परिवेश में ही जीवधारी अपने आवास [Habitat] का निर्माण करते हैं।

प्राकृतिक पर्यावरण में उत्पन्न और उसमें पोषित-जीव पारिस्थितिकी [Ecology] को जन्म देते हैं।

पर्यावरण परिवर्तनशील होता है। इसलिये पारिस्थितिकी में भी परिवर्तन होते रहते हैं।

यह परिवर्तन जीवों की अनुक्रियाओं को प्रभावित करता है। पृथ्वी की उत्पत्ति को लेकर आज तक पर्यावरण में अनेक परिवर्तन हो चुके हैं।

यही कारण है कि मुख्य तथा अन्य जीवों में विविधता पाई जाती है। अतः आज इसका अध्ययन आवश्यक हो गया है।

1. नवीनतम आधुनिक तकनीकों के प्रयोग, अधिक संसाधन सन्दोहन, बढ़ता जनसंख्या का भार, नगरीकरण एवं औद्योगिकरण के दोष आदि के कारण परिणाम एवं निवारण के आय खोजने के लिये पर्यावरण का अध्ययन आवश्यक है।

2. स्वच्छ पेयजल, शुद्ध वायु, पौष्टिक भोजन, विशुद्ध मिट्टी के अभाव और इससे फैलते रोगों-ने पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा की है।

यही कारण है कि विकसित देशों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है।

3. वनस्पतियों एवं जीवों की विलुप्त होती प्रजातियों के प्रति मानव मोह बढ़ा है।
4. पर्यावरण की बढ़ती समस्या ने इसे समझने, सुधारने एवं नियंत्रण करने के लिये मानव समुदाय को प्रेरित किया है।
5. पर्यावरण, जीव का आवास [Habitat] कहलाता है। सभी जीव अपने आवास के प्रति संवेदनशील होते हैं। आवास परिवर्तन से जीवों का जीवन इभर हो जाता है। जीव जगत की इस व्यवस्था को समझने के लिये पर्यावरण का अध्ययन आवश्यक है।
6. पर्यावरणीय घटक परस्पर अन्तः क्रिया द्वारा पर्यावरण को संतुलित बनाये रखते हैं। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है प्राकृतिक परिवर्तन के प्रति जीव अपने आपको स्व संचालित और अनुकूलित कर लेता है। किन्तु मानव द्वारा लाये गए परिवर्तन से जीवधारियों का जीवन संकटमय हो जाता है। अतः पर्यावरण को बचाने के लिये पर्यावरण का अध्ययन अनावश्यक है।

पर्यावरण अध्ययन व पर्यावरण शिक्षा में संबंध :-

[Relation between Environment Studies and Environment Education]

DEV SINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

पर्यावरण विश्व का सम्पूर्ण पक्ष प्रदर्शित करता है परंतु इसके किसी विशिष्ट समय तथा स्थान पर जो गतिविधि होती है उससे सामाजिक तथा आर्थिक प्रणाली का संबंध होता है।

पर्यावरण की गुणवत्ता उसके भौतिक एवं जैविक पक्षों की मौलिकता पर निर्भर है।

भौतिक तथा जैविक पक्ष सामाजिक तथा आर्थिक विकास को प्रभावित करते हैं तथा विपरीत प्रभाव कभी - 2 होता है।

शिक्षा का अध्ययन क्षेत्र विकास है जिसका सम्बंध विकास की प्रक्रिया से है जिसमें शिक्षण, अनुदेशन तथा प्रशिक्षण की प्रक्रियाएँ प्रचुर हैं।

शिक्षा का लक्ष्य शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा भावात्मक पक्षों का विकास करना है जिसे सम्पूर्ण विकास भी कहते हैं।

शिक्षा का कार्य, अध्यापन करना तथा सीखने हेतु कक्षा तथा विद्यालय में समुचित वातावरण उत्पन्न करना है जिससे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किया जा सके। दल विद्यालय में भौतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से अनुभव करता है तथा कक्षा में सामाजिक तथा भावात्मक वातावरण से अनुभव करता है। जिससे उसके व्यवहार में परिवर्तन आता है।

वातावरण तथा वेशानुक्रम चरक दोनों ही व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा वेशानुक्रम में कुछ भी नहीं कर सकता परंतु वातावरण का स्वरूप, शिक्षक की कार्य बुशलता तथा प्रभावशीलता पर निर्भर करता है।

इसलिये शिक्षा के अन्तर्गत नये क्षेत्र पर्यावरण शिक्षा का विकास हुआ है।

“ पर्यावरण शिक्षा ” औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही प्रकार की होती है।

पर्यावरण शिक्षा के पक्ष -

1. पर्यावरण की जानकारी
2. पर्यावरण का वास्तविक जीवन से सम्बन्ध
3. स्त्रोतों का उपयोग

DEVSINGH EDUCATIONAL BUDH
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

पर्यावरण शिक्षा का महत्व

[Importance of Environment Education]

पर्यावरण के बारे में सोच जब प्रारम्भ हुई और उस सोच के आधार पर पर्यावरण के संरक्षण, रक्षा और सुधार की बात जब बुद्धिजीवियों ने उठाई। तभी से इस हेतु कई नैदानिक तथा उपचारत्मक तरीके अपनाने पर चल दिया गया।

यह बात मानव पर्यावरण पर स्टारकहोम [1972] में आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भी रखी गई और वहां ही इस बात पर प्रस्ताव पारित किया गया।

निश्चित ही जिन आधार पर या आधार बिन्दुओं पर [वेलग्रेड चार्टर - 1975] तिवलिसी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन [1977] ने पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रम को प्रस्तुति दी और पर्यावरण शिक्षा के कार्यक्रम की उपादेयता स्पष्ट की वह सभी पर्यावरण शिक्षा के महत्व के अन्तर्गत आते हैं। उनका विवरण और समेकित हो सकने वाले बिन्दु काफी विस्तृत हो सकते हैं, अतः मोटे रूप में हम निम्न प्रकार पर्यावरण शिक्षा के महत्व रख सकते हैं -

1. लोगों को पर्यावरण की सत्य और तथ्यात्मक जानकारी देना
2. जानकारी के आधार पर संभावित कारणों का पता लगाना।
3. उन समस्याओं की जानकारी देना जो निकट भविष्य में घट सकती हैं और जनजीवन की विपदाओं का कारण बन सकती हैं।
4. समस्या के हल खोजना, उताना / जानना / समझना और उनसे निपटने अथवा हल खोजने हेतु मनुष्य को तैयार करना।
5. समस्याओं की समझना और उनसे निपटना अथवा हल खोजने हेतु मनुष्य को तैयार करना
6. पर्यावरण संरक्षण, सुरक्षा और सुरक्षा सुधार के कार्यों में लग जाने हेतु प्रेरित करना
7. भावी पीढ़ी के भविष्य की समझ कर ही कार्यों को करने की समझ देना।
8. स्वयं सुखी जीयें और दूसरे प्राणी भी सुख से जीयें; वाली भावना को आमसात करने की तैयार करना।

अधिगम एवं शिक्षण के सिद्धान्त

[Learning and Teaching principles]

अधिगम के सिद्धान्त—

1. क्रियाशीलता का सिद्धान्त

[The principle of Activity]

2. जीवन से सम्बन्धित करने का सिद्धान्त

[The principle of Linking with Life]

3. रुचि का सिद्धान्त

[The principle of Interest]

4. प्रेरणा का सिद्धान्त

[The principle of Motivation]

5. निश्चित उद्देश्य का सिद्धान्त

[The principle of Definite Aim]

6. चयन का सिद्धान्त

[The principle of Selection]

7. पुनरावृत्ति का सिद्धान्त

[The principle of Revision]

8. विभाजन का सिद्धान्त

[The principle of Division]

9. वैयक्तिक विभिन्नता का सिद्धान्त

[The principle of Individual Differences]

DEV SINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

10. आयोजन का सिद्धान्त
[The principle of Planning]

11. मनोरंजन का सिद्धान्त
[The principle of Recreation]

12. प्रजातन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त
[The principle of Democratic Dealing]

13. वातावरण का सिद्धान्त
[The principle of Environment]

DEV SINGH EDUCATIONAL BUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

Dev Singh 9455918439

शिक्षण के सिद्धान्त-

[Principle of Teaching]

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर
[from known to Unknown]
2. सुगम से कठिन की ओर
[from easy to Difficult]
3. रूढ़ से सूक्ष्म की ओर
[from Concrete to Abstract]
4. अनिश्चित से निश्चित की ओर
[from Indefinite to Definite]
5. विशेष से सामान्य की ओर
[from Particular to General]
6. सरल से जटिल की ओर
[from simple to complex]
7. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
[from Analysis to Synthesis]
8. प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर
[from seen to Unseen]
9. अनुभव से विचार की ओर
[from Empirical to Rational]

DEV SINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

10. मनोवैज्ञानिक से क्रम बढ़ता की ओर
[from psychological to Logical]

11. पूर्ण से भंश की ओर
[from whole to parts]

12. प्रकृति का अनुसरण
[follow Nature]

13. आगमन विधि का अनुसरण
[follow Inductive Method]

DEV SINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob. - 9455918439

14. स्वाध्याय को प्रोत्साहन
[Encouragement of Self Study]

शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले शिक्षण प्रतिमान एवं प्रतिपादक

शिक्षण प्रतिमान

1. प्रत्यक्ष शिक्षण प्रतिमान
2. परिपक्व शिक्षण प्रतिमान
3. ग्लेसर का आधारभूत शिक्षण प्रतिमान
4. प्रगतिशील संगठनकारी प्रतिमान
5. सामाजिक पूष्टता का प्रतिमान
6. विकासवादी प्रतिमान
7. विद्यालय अधिगम के लिये शिक्षण प्रतिमान

प्रतिपादक

जे. एस्. ब्रूनर 1956

रिचर्ड स्क्वैमैन

रॉबर्ट ग्लेसर 1962

डेविड आसुबेल

बैंजामिन कॉक्स

जोन्स पियाजे

कैरोल 1962

8. प्रयोगशाला विधि प्रतिमान वैथल एवं मैन
9. अन्तः क्रिया शिक्षण प्रतिमान नैड ए. फलैण्डस [1960]
10. सामूहिक अन्वेषण प्रतिमान जॉन डीवी एवं किलपैट्रिक
11. कम्प्यूटर पर आधारित शिक्षण प्रतिमान स्टून लौरी एवं डेविस [1965]

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की विधियाँ

[Methods of teaching of EVS]

1. किंडरगार्टन विधि [Kindergarten Method]

इस विधि के जन्मदाता जर्मन शिक्षा विद् रुफ. ए. फ्रीबेल थे।

इसे Kinder [बालक] तथा Garten [उद्यान] अर्थात् 'बाली-उद्यान' शिक्षण पद्धति भी कहा जाता है। यह विधि अग्रे 6 सिद्धान्तों पर आधारित है -

- I. एकता [Unity]
- II. विकास [Development]
- III. स्वयं क्रिया [Self Activity]
- IV. स्वतंत्रता [freedom]
- V. समाजीकरण [Socialization]
- VI. खेल [Play]

DEV SINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439

2. मांटेसरी विधि [Montessori Method]

इस विधि की जन्मदाता इटली की डा० मारिया मांटेसरी थी।

जिसने बच्चों को [विशेषकर 3 से 7 वर्ष आयु वर्ग तक के] विशेष प्रकार की शिक्षा देने का मार्ग प्रशस्त किया और विश्व के शिक्षा क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान बनाया। इस प्रणाली के मुख्य सिद्धान्त निम्न हैं -

1. स्वयं विकास का सिद्धान्त
[Principle of self-Development]
2. स्वतंत्रता का सिद्धान्त
[Principle of freedom]
3. धारैन्द्रियों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त
[Principle of sense-training]
4. मांसपेशियों के प्रशिक्षण का सिद्धान्त
[Principle of muscular training]
5. स्वयं-शिक्षा का सिद्धान्त
[Principle of Auto-Education]

3. डाल्टन प्लान विधि

[Dalton's Plan Method]

इस विधि के निर्माण का श्रेय **अमेरिकन शिक्षाशास्त्री कुमारी हेलेन पार्कहर्स्ट** को जाता है।

जिन्होंने मॉन्टेसरी पद्धति को आधार मानकर बड़े बालकों [9 वर्ष - अधिक] के लिये एक ही विधि प्रदान की जिसमें बच्चों को

निश्चित समय में निश्चित कार्य [Definite work in definite time period] करना होता है।

बालक यहाँ पर स्वतंत्र होता है। और शिक्षण के साथ-2 उसे अपने व्यक्तित्व विकास के पूर्ण अवसर प्राप्त हैं।

चूँकि इस विधि में कोई कक्षा-कक्ष का प्रावधान नहीं है। अतः इसे प्रयोगशाला योजना भी कहा जाता है।

मुख्य विशेषताएँ -

1. यह बालक को कराये जाने वाले कार्य को व्यवस्थित करने का तरीका है।
2. इसमें सामूहिक शिक्षण के वजाय वैयक्तिक शिक्षण पर बल दिया जाता है।
3. किसी भी सलीय कार्य की पूरी रूपरेखा बनाकर उसे मासिक और फिर सप्ताहिक में विभाजित कर दिया जाता है। बालक एक के बाद एक भाग पूरा करके आगे बढ़ता है।

4. इस विधि में कक्षा-कक्षों का प्रावधान नहीं है।
इसके विपरीत विशेष प्रयोगशालायें होती हैं जिनमें बालक अपना-अपना कार्य करते हैं।
5. इस पद्धति में बालकों के कार्य का अभिलेख सुव्यवस्थित रूप से रखा जाता है।
6. बच्चों की कठिनाइयों को दूर करने हेतु विषय विशेषज्ञों के साथ सामूहिक विचार-विमर्श किया जाता है।
7. यह विधि सभी स्तर के बालकों के लिये उपयोगी है।

4. प्रोजेक्ट विधि [Project Method]

इस विधि के जन्मदाता अमेरिका के कोलम्बिया विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्री **डब्लू. डी. किल्पैट्रिक** को माना जाता है। शिक्षा दार्शनिक जॉन डीवी ने अपनी प्रयोजनवादी विचारधारा में व्यवहारिक जीवन में काम आ सकने वाली बातें ही सत्य हैं।

प्रोजेक्ट को अनेक विद्वानों ने निम्न प्रकार परिभाषित किया -

किल्पैट्रिक - प्रोजेक्ट एक सौदृश्य क्रिया है जिसे मन लगाकर सामाजिक वातावरण में किया जाये।

स्टीवेंसन - प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है जिसे स्वाभाविक परिस्थिति में पूरा किया जाये।

5. समस्या समाधान विधि

[Problem solving method]

यह विधि एक शैक्षिक प्रणाली है, जिसके द्वारा शिक्षक तथा छात्र किसी महत्वपूर्ण शैक्षिक कठिनाई के समाधान या स्पष्टीकरण के लिये सचेत होकर पूर्ण संलग्नता से प्रयास करता है।

समस्या समाधान पद्धति छात्रों को स्वयं सीखने के लिये तत्पर बनाती है।

समस्या समाधान के क्रमानुसार विभिन्न पद -

1. समस्या की पहचान करना
2. समस्या की प्रस्तुत करना
3. समस्या पर क्रियान्विति
 - आंकड़ों का संकलन
 - आंकड़ों का वर्गीकरण एवं व्यवस्था
 - आंकड़ों का विश्लेषण
4. निष्कर्ष निकालना
5. परिणामों की सत्यता की जाँच करना
6. परिणामों का उपयोग करना

DEV SINGH EDUCATIONAL HUB
An Online Institution...
Mob.- 9455918439